जुमा का ख़ुतबा

दिनांक: 25 मुहर्रमुल हराम 1448 हिजरी, मुताबिक 10 जुलाई 2026 ईस्वी

وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا

अल्लाह के यहाँ बुलंद मक़ाम कैसे पाएँ?

तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, हम उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद माँगते हैं और उसी से माफ़ी तलब करते हैं। और हम अपने नफ़्स की बुराइयों और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं। जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, और जिसे वह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (ﷺ) उसके बंदे और उसके रसूल हैं।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ [آل عمران: 102]

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है, और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।" [सूरह आल-ए-इम्रान: 102]

يَاأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا [النساء: 1]

"ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं। और उस अल्लाह से डरो जिसके नाम पर तुम एक दूसरे से माँगते हो, और रिश्तों (का लिहाज़ रखो), बेशक अल्लाह तुम पर निगाह रखने वाला है।" [सूरह अन्-निसा: 1]

सबसे सच्ची बात अल्लाह की किताब है, और सबसे बेहतरीन तरीक़ा मुहम्मद ﷺ का तरीक़ा है। और सबसे बदतरीन काम (दीन में) नई पैदा की गई बातें हैं, और हर नई बात बिदअत है, और हर बिदअत गुमराही है, और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

ऐ मुसलमानो! इंसान के स्वभाव और उसकी घुट्टी में यह बात शामिल है कि वह इज़्ज़त, नाम और ऊँचे मक़ाम को पसंद करता है। हर आदमी यह चाहता है कि लोगों के दिलों में उसकी जगह हो और मरने के बाद भी दुनिया उसे अच्छे नाम से याद रखे। लेकिन सच्ची

इज़्ज़त और असल मक़ाम जिसे एक मुसलमान को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए, वह सिर्फ़ अल्लाह के यहाँ इज़्ज़त और बुलंद मर्तबा हासिल करना है। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया:

وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا [الأحزاب: 69]

"और वह अल्लाह के नज़दीक बड़े प्रतिष्ठित थे।"[सूरह अल-अहज़ाब: 69]

यानी अल्लाह के यहाँ उनकी बड़ी इज़्ज़त, ऊँचा मक़ाम और मक़बूलियत थी। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं: "वह अल्लाह के इतने लाडले और प्यारे थे कि अल्लाह से जो कुछ भी माँगते, अल्लाह उन्हें प्रदान कर देता था।"

उसी तरह अल्लाह के नबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का हाल था; अल्लाह तआला ने कहा:

إِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَامَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ [آل عمران: 45]

"जब फ़रिश्तों ने कहा: ऐ मरियम! बेशक अल्लाह तुम्हें अपनी तरफ़ से एक कलिमे की ख़ुशख़बरी देता है जिसका नाम मसीह ईसा इब्ने मरियम होगा, वह दुनिया और आख़िरत में प्रतिष्ठित होगा और क़रीबी बंदों में से होगा।" [सूरह आल-ए- इम्रान: 45]

और यही हाल नबी करीम ﷺ का था, अल्लाह तआला के यहाँ आप ﷺ का मर्तबा, शरफ़ और पद बहुत बुलंद था, चुनाँचे जहाँ भी अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है वहाँ नबी ﷺ का ज़िक्र भी होता है, अल्लाह तआला ने कहा:

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ [الشرح: 4]

"और हमने आपकी ख़ातिर आपका ज़िक्र बुलंद कर दिया।" [सूरह अश-शर्ह: 4]

ऐ मुसलमानो! अल्लाह के यहाँ इज़्ज़त और बुलंद मक़ाम हासिल करने की चाहत एक ऐसा मामला है जिसे रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा के बीच साफ़ तौर पर ज़ाहिर फ़रमाया, उन्हें इस तरफ़ आकर्षित किया और इसे हासिल करने का शौक़ दिलाया। चुनाँचे हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है: "देहात के रहने वाले एक सहाबी थे जिनका नाम ज़ाहिर था, वह नबी करीम ﷺ की सेवा में (देहात के) तोहफ़े लाया करते थे और नबी करीम ﷺ उनसे मोहब्बत फ़रमाते थे, वह बदसूरत आदमी थे। एक दिन नबी करीम ﷺ उनके पास

तशरीफ़ लाए जब वह अपना सामान बेच रहे थे, आप ﷺ ने उन्हें पीछे से गले लगा लिया और वह आप को देख नहीं पा रहे थे। नबी ﷺ ने (मज़ाक़ में) फ़रमाना शुरू किया:

«مَنْ يَشْتَرِي هَذَا الْعَبْدَ؟»

'इस ग़ुलाम को कौन ख़रीदेगा?'

उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! तब तो अल्लाह की क़सम आप मुझे बहुत कम क़ीमत (या कम पसंद किया जाने वाला) पाएँगे। तो नबी ﷺ ने फ़रमाया:

«بَلْ أَنْتَ عِنْدَ اللَّهِ غَالٍ»

"बल्कि तुम अल्लाह के नज़दीक बहुत क़ीमती हो।" [इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने अश्-शमाइल में रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है]।

रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा में एक सहाबी थे जिन्हें 'जुलैबीब' कहा जाता था, वह भी बदशक्ल थे। एक बार रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे शादी का ज़िक्र फ़रमाया, तो उन्होंने कहा: तब तो आप मुझे नापसंद पाएँगे (यानी कोई मुझसे शादी नहीं करेगा)। इस पर आप ﷺ ने फ़रमाया:

«غَيْرَ أَنَّكَ عِنْدَ اللَّهِ لَسْتَ بِكَاسِدٍ»

'लेकिन तुम अल्लाह के यहाँ बे-क़ीमत और नापसंद नहीं हो'। चुनाँचे आप ﷺ ने ख़ुद एक अंसारी महिला से उनका निकाह पढ़ा दिया। [इस हदीस को इमाम अबू याला ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने सही क़रार दिया है]।

यह है वह इज़्ज़त और असली मर्तबा जिसके हासिल करने की एक मुसलमान को कोशिश करनी चाहिए, और यही वह मुक़ाबले का मैदान है जहाँ एक दूसरे से आगे निकल जाने वालों की तारीफ़ की जाती है। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ [المطففين: 26]

"और चाहिए कि आगे बढ़ने वाले इस (नेमत) को हासिल करने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने का मुक़ाबला करें।" [सूरह अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन: 26]

वुहैब बिन अल-वर्द रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

إِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ لَا يَسْبِقَكَ إِلَى اللَّهِ أَحَدٌ فَافْعَلْ

"अगर तुम यह ताक़त रखते हो कि अल्लाह की तरफ़ (नेकियों की दौड़ में) तुमसे आगे कोई न निकले, तो ऐसा ज़रूर करो।"

ऐ मुसलमानो! अल्लाह के पास बा-इज़्ज़त और बुलंद मर्तबा होने की सबसे बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि अल्लाह ख़ुद उस बंदे का अच्छा ज़िक्र आम फ़रमा देता है, कायनात में उसका नाम बुलंद करता है, और उसे अपनी ख़ास नज़दीकी से नवाज़ कर ख़ुद उसके बहुत क़रीब हो जाता है। चुनाँचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلَإٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلَإٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ بِشِبْرٍ تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

"अल्लाह तआला फ़रमाता है: मैं अपने बंदे के उस गुमान के साथ होता हूँ जो वह मेरे बारे में रखता है, और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ, और अगर वह मुझे किसी जमात में याद करता है तो मैं उसे ऐसी जमात में याद करता हूँ जो उनसे बेहतर (यानी फ़रिश्तों की जमात) है। और अगर वह मेरी तरफ़ एक बालिश्त क़रीब होता है तो मैं उसकी तरफ़ एक हाथ क़रीब होता हूँ, और अगर वह मेरी तरफ़ एक हाथ क़रीब होता है तो मैं उसकी तरफ़ दो हाथ क़रीब होता हूँ, और अगर वह मेरी तरफ़ चल कर आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर आता हूँ।" [सही बुख़ारी, सही मुस्लिम]।

अल्लाह के यहाँ आदरणीय और बुलंद मर्तबा आदमी से अल्लाह मोहब्बत फ़रमा देता है, और आसमान व ज़मीन वालों में उसकी मोहब्बत फैला देता है, और वह अल्लाह की हिफ़ाज़त और मदद में रहता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى إِذَا أَحَبَّ عَبْدًا نَادَى جِبْرِيلَ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَبَّ فُلَانًا فَأَحِبَّهُ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ، ثُمَّ يُنَادِي جِبْرِيلُ فِي السَّمَاءِ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَبَّ فُلَانًا فَأَحِبُّوهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ، وَيُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي أَهْلِ الْأَرْضِ [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ]

"बेशक अल्लाह तआला जब किसी बंदे से मोहब्बत करता है तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम को पुकार कर कहता है: अल्लाह फ़लाँ से मोहब्बत करता है तुम भी उससे मोहब्बत करो, तो जिब्राईल उससे मोहब्बत करने लगते हैं। फिर जिब्राईल आसमान में ऐलान करते हैं कि: अल्लाह फ़लाँ से मोहब्बत करता है अतः तुम सब भी उससे मोहब्बत करो, तो आसमान वाले उससे मोहब्बत करने लगते हैं, फिर ज़मीन वालों में उसकी लोकप्रियता आम कर दी जाती है।" [सही बुख़ारी, सही मुस्लिम]।

अल्लाह के यहाँ बुलंद मक़ाम का मामला यहाँ तक पहुँच जाता है कि अगर वह किसी चीज़ पर अल्लाह की क़सम खा ले तो अल्लाह उसकी क़सम पूरी करता है; यह उसकी इज़्ज़त बढ़ाने, उसको सम्मानित करने और उसके मर्तबे की बुलंदी के लिए होता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

رُبَّ أَشْعَثَ، مَدْفُوعٍ بِالْأَبْوَابِ، لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لَأَبَرَّهُ [رَوَاهُ مُسْلِمٌ]

"बहुत से बिखरे बालों वाले और दरवाज़ों से धुतकारे जाने वाले ऐसे होते हैं कि अगर वह अल्लाह पर क़सम खा लें तो अल्लाह उनकी क़सम ज़रूर पूरा कर दे।" [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है]।

अल्लाह तआला मेरे और आपके लिए पवित्र क़ुरआन में बरकत अता फ़रमाए, और मुझे और आपको इन आयात और हिकमत भरी नसीहतों से फ़ायदा पहुँचाए। मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अपने लिए और आप सब के लिए हर गुनाह से अल्लाह से माफ़ी मांगता हूँ, इल लिए आप भी उसी से माफ़ी माँगिए, बेशक वह बहुत माफ़ करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

दूसरा ख़ुतबा

सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, और दरूद व सलाम हो उस हस्ती पर जिसके बाद कोई नबी नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (ﷺ) उसके बंदे और उसके रसूल हैं।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا (70) يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا [الأحزاب: 70، 71]

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी (सच्ची) बात कहा करो। वह तुम्हारे कामों को ठीक कर देगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और जो भी अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानेगा, उसने बहुत बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।" [सूरह अल-अहज़ाब: 70, 71]

अल्लाह तआला के यहाँ बुलंद मक़ाम और इज़्ज़त व मर्तबा पाने का सबसे बेहतरीन रास्ता यह है कि बंदा हमेशा अल्लाह की याद में मग्न रहे, उसी के ज़िक्र से दिल का सुकून तलाश करे, अपने दिल और ज़ुबान को अल्लाह की बड़ाई और महानता के गीतों से तरोताज़ा रखे और उसके पाक नामों और सिफ़ात के वास्ते से अल्लाह से दुआ करता रहे। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ[البقرة: 152]

"तो तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूँगा।" [अल-बक़रह: 152]

और हदीस-ए-क़ुदसी में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي

"और मैं उसके साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है।"

अल्लाह के यहाँ बुलंद मक़ाम और इज़्ज़त व मर्तबा पाने का एक रास्ता यह भी है कि इंसान अल्लाह को राज़ी करने की पूरी कोशिश करे; फ़र्ज़ कामों को वक़्त पर पूरा करे, नफ़्ली कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले, गुनाहों और हराम कामों से बिलकुल दूर रहे और नापसंद बातों से भी अपने आप को बचाकर रखे। चुनाँचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

إِنَّ اللَّهَ قَالَ: مَنْ عَادَى لِي وَلِيًّا فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالْحَرْبِ، وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِي بِشَيْءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِمَّا افْتَرَضْتُ عَلَيْهِ، وَمَا يَزَالُ عَبْدِي يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ حَتَّى أُحِبَّهُ، فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ، وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ، وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا، وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا، وَإِنْ سَأَلَنِي لَأُعْطِيَنَّهُ، وَلَئِنِ اسْتَعَاذَنِي لَأُعِيذَنَّهُ (رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ)

"अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिसने मेरे किसी वली (मित्र) से दुश्मनी की, उसे मेरी तरफ़ से जंग का ऐलान है। और मेरा बंदा जिन-जिन इबादतों के ज़रिए मेरी नज़दीकी हासिल करता है, उनमें से कोई इबादत मुझे उससे ज़्यादा पसंद नहीं है जो मैंने उस पर फ़र्ज़ की है (यानी फ़र्ज़ काम मुझे बहुत पसंद हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात)। और मेरा बंदा फ़र्ज़ अदा करने के बाद नफ़्ल इबादतें करके मुझसे इतना नज़दीक हो जाता है कि मैं उससे मोहब्बत करने लग जाता हूँ। फिर जब मैं उससे मोहब्बत करने लग जाता हूँ, तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है, उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है, उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है, उसका पाँव बन जाता हूँ जिससे वह चलता है। और अगर वह मुझसे माँगता है तो मैं उसे देता हूँ, और अगर वह किसी दुश्मन या शैतान से मेरी पनाह माँगता है तो मैं उसे सुरक्षित रखता हूँ।" [इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है]।

अल्लाह के यहाँ बुलंद मक़ाम और इज़्ज़त व मर्तबा पाने के रास्तों में से एक रास्ता फ़ायदेमंद इल्म सीखना, उस पर अमल करना, उसे फैलाना और उसकी चाहत रखना है; ताकि मुसलमान को अल्लाह तआला की पहचान का एक बड़ा हिस्सा हासिल हो जाए। यह पहचान उसके अच्छे नामों (अस्माउल हुस्ना) और ऊँची सिफ़ात का इल्म हासिल करने से होती है, और यह जानने से होती है कि अल्लाह किस चीज़ को पसंद करता है और किसे नापसंद, और कौन सी चीज़ उसके क़रीब करती है और कौन सी उससे दूर करती है। अल्लाह तआला ने कहा:

يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ [المجادلة: 11]

"अल्लाह तुम में से उन लोगों के दर्जे बुलंद कर देता है जो ईमान लाए और जिन्हें इल्म दिया गया।" [सूरह अल-मुजादला: 11]

अल्लाह के बंदो! यहाँ यह बात ख़ास तौर पर ज़हन में रखनी चाहिए कि किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं कि वह दुआ माँगते हुए नबियों या नेक लोगों के रुतबे और मक़ाम का वसीला अपनाए। चुनाँचे यह कहना ठीक नहीं कि: 'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मुहम्मद ﷺ या फ़लाँ बुज़ुर्ग के मर्तबे और मक़ाम के वास्ते से माँगता हूँ।' इसकी वजह यह है कि ऐसा

करना सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का तरीक़ा नहीं था; उन्होंने न तो नबी करीम ﷺ की ज़िंदगी में ऐसा किया और न ही आपकी वफ़ात के बाद, और न ही उनसे आम दुआओं में इसका कोई सबूत मिलता है। इसके उलट, एक मुसलमान को अपनी दुआ में सिर्फ़ उन्हीं माध्यमों से वसीला तलाश करना चाहिए जो किताब और सुन्नत से साबित हैं; जैसे अल्लाह तआला को उसके अच्छे नामों से पुकारना, अपने नेक कामों का वास्ता देना, या इसके जैसे दूसरे जायज़ वसीले अपनाना।

ऐ अल्लाह! तू अपने बंदे और अपने नबी मुहम्मद ﷺ पर दरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा, और आपके ख़ुल्फ़ा-ए-राशीदीन, आपकी अज़वाज-ए-मुतहहरात (पवित्र पत्नियों) जो मोमिनों की माएँ हैं, आपके तमाम दूसरे सहाबा, और क़यामत तक अच्छाई के साथ उनकी पैरवी करने वालों से राज़ी हो जा। ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी बेहतरीन इबादत पर हमारी मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमें हमारे वतनों में अमन-चैन अता फ़रमा, और हमारे मुल्कों में अमन व मज़बूती की नेमत को हमेशा बरक़रार रख। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली अहद (उत्तराधिकारी) को अपनी हिदायत के कामों की तौफ़ीक़ दे, और इन दोनों के कामों को अपनी रज़ा के मुताबिक़ बना दे, और इन दोनों को सेहत, आफ़ियत और ईमान का लिबास पहना। और इस मुल्क को और मुसलमानों के दूसरे तमाम मुल्कों को अमन व इत्मीनान का गहवारा बना दे। और हमारी आख़िरी पुकार यही है कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारी दुनियाओं का पालने वाला है।

ख़ुतबात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी